साहित्य एकेडमी का विश्व पुस्तक दिवस के अवसर पर परिसंवाद आयोजित, वक्ताओं ने तकनीक व पुस्तकों के भविष्य पर विचार रखे

नई दिल्ली। साहित्य एकेडमी द्वारा विश्व पुस्तक दिवस के अवसर पर 'तकनीक और पुस्तकें पठन और लेखन का भविष्य' विषय पर परिसंवाद का आयोजन रवींद्र भवन स्थित अपने सभाकक्ष में किया। कार्यक्रम के आरंभ में एकेडमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने वक्ताओं का स्वागत अंगवस्त्र एवं पुस्तक भेंट करके किया। उन्होंने अपने स्वागत वक्तव्य में कहा कि सोशल मीडिया ने लेखक और पाठक के बीच की दूरी को समाप्त कर दिया है। कार्यक्रम की अध्यक्षता संगीत नाटक एकेडमी की अध्यक्ष डॉ. संध्या पुरेचा ने की। उन्होंने कहा कि पुस्तकें कभी समाप्त नहीं हो सकतीं। युवा पीढ़ी को आज इंटरनेट के माध्यम से अपनी पसंद की पुस्तक पढ़ने को आसानी से मिल जाती हैं, चाहें वह विश्व के किसी कोने में भी हो। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि हम किताबें पढ़ें, लिखें, उन पर सवाल करें, विद्वानों के साथ समय व्यतीत करें। जय प्रकाश ने कहा कि जब तकनीक नहीं थी, तब भी शब्दों का चलन था। उस समय वाचिक शब्द का बोलबाला था। फिर धीरे-धीरे लिपि विकसित हुई। उन्होंने कहा कि पठन और लेखन के बीच हमें उनकी गुणवत्ता का भी ध्यान रखना होगा।